April, 2016

# radhi darsan

**A reflection of Radhi Kayastha**

akhil bhartiya radhi kayastha sangathan
C-5, 2nd Floor, RK Tower, Plot No 21-22, Sector 4, Vaishali, Ghaziabad, UP

# राढ़ी दर्शन

अखिल भारतीय राढ़ी कायस्थ संगठन की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1, अंक : 4, अप्रैल 2016

संपादक : अभिनंदन कुमार सिन्हा

## अपनी बात

किसी भी समाज में त्योहारों का मतलब सिर्फ एक ही होता है कि हम आपस में अपनी खुशियों को एक-दूसरे के साथ बाँटे और एक दूसरे को अधिक से अधिक जानें, क्योंकि आज की इस भाग-दौड़ वाली जिन्दगी में हमें एक-दूसरे के लिए वक्त निकालना तक कठिन हो गया है । और शायद यही एक कारण है कि भारतवर्ष त्योहारों की संख्या में सबसे सुखी है । हर मौसम या यूँ कहें कि हर महीने विभिन्न कारणों से हमारे पूर्वजों ने त्योहारों को मनाने के अलग-अलग बहाने भी दिए हैंख जिनका अपना एक वैज्ञानिक महत्व भी है । और ऐसा ही एक त्योहार होली भी है। गत माह छत्तरपुर (जिला-मेहरौली, नई दिल्ली) में 'होली-मिलन' का आयोजन अखिल भारतीय राढ़ी कायस्थ संगठन, दिल्ली द्वारा किया गया। हम श्री अजित कुमार दास जी का 'होली मिलन' कार्यक्रम की व्यवस्था के लिए विशेष रूप से आभार प्रकट करते हैं । यह 'होली-मिलन' अपने भव्य व्यवस्था के लिए तो जाना ही जायेगा, इसके साथ-ही-साथ लोगों की उपस्थितियों के लिए भी जाना जायेगा । दिल्ली एवं आस-पास के क्षेत्रों से अपने परिवार के साथ पहुँचे लोगों ने न केवल एक-दूसरे को अपना परिचय दिया, बल्कि श्री के. सी. सिन्हा जी ने इस अवसर पर 'होली-मिलन' गीत भी समर्पित किया । इस होली-मिलन का महत्व तब और भी बढ़ गया कि जब पारम्परिक रंगों की जगह होली फूलों से खेली गई । इस अवसर पर होली में बनने वाले पारम्परिक पुआ-पकवान, दही-बड़े के अतिरिक्त ठंडई, और पूरी-सब्जी की व्यवस्था की भी व्यवस्था की गई थी । हम उन सभी सदस्यों का भी धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने आगे बढ़कर कार्यक्रम के व्यय में अपना योगदान दिया ।

अंत में दुःख के साथ यह सूचित करना पढ़ रहा है कि दिनांक 16 अप्रैल 2016 को राढ़ी बांधव समिति, भागलपुर के पूर्व अध्यक्ष, व कवि, कथाकार एवं टी.एन.बी. कॉलेज, भागलपुर के प्राध्यापक श्री श्याम लाल आनंद (बच्चू) का निधन हो गया। भगवान उनकी आत्मा को शांति दे एवं उन के परिवार को इस दुःख की घड़ी में हिम्मत प्रदान करें ।

-अभिनंदन

# होली-मिलन

1
फागुन का मद-मस्त महीना
शरद-ग्रीष्म का मधुर मिलन ।
पुष्प सुशोभित हरित वाटिका
हरा-भरा ये वन-उपवन ।।

2
शीतल मन्द पवन अति पावन
बहता मन्थर गति चहुँ ओर ।
तन में सिहरन पैदा करता
मन को देता है झकझोर ।।

3
ऊर्जा से भरपूर मगन मन
खुशियाँ सभी मनाते हैं ।
सदियों से आ रही प्रथा हम
होली पर्व मनाते हैं ।।

4
गाँव-गाँव में हर नुक्कड़ में
बच्चे, बूढ़े और जवान ।
बैठ जमीं पर गोलबन्द हो
गाते सुर में फगुआ-गान ।।

5
बैठ ढोलकिया लिये गोद में
ढोलक पर देते हैं ताल ।
बीच भजनियाँ रंग में लथपथ
सबके मँह में भरे गुलाल ।।

2
घर-घर बनता पूआ-पूड़ी
बहुविधि व्यंजन औ पकवान ।
इक-दूजे घर जा मिल खाते
साथी हो या हो मेहमान ।।

7
नहीं भेद कुछ जात-पात का
ऊँच-नीच सब एक समान ।
खुलकर फाग मनाते, देते
बड़े-बुजुर्गों को सम्मान ।।

8
इसी भावना को लेकर है
आज हमारा होली-मिलन ।
यहाँ पधारे दूर-दूर से
दिल्ली-वासी साथी गण ।।

9
खुशकिस्मत मैं हुआ उपस्थित
आयोजन में पहली बार ।
धन्यवाद जो यहाँ पधारे
साथ लिये निज-निज परिवार ।।

10
नहीं कदापि अपने से कम
महिलाओं को आंके आप ।
जीवनभर वे सदा आपकी
कहलाती हैं "Better Half"

3
मातृशक्ति को सदा राष्ट्र की
प्रगति में देना है ध्यान ।
जाकि अमारा आगे बढ़कर
होगा भारत देश महान ।।

12
नहीं कदाचित मन में लाएँ
यह मेरा है निती विचार ।
छोड़ें अब हम खुशी मनाएँ
व्यक्त करें मन का उद्गार ।।

13
हर कोई को गले लगाएँ
दें गुलाल टीका चन्दन ।
नाँचे-कूदें, गाना गाएँ
मर्यादित हो मनोरंजन ।।

14
बीच-बीच में मीठा-नमकीन
या जो मुमकिन हो तैयार ।
स्वेच्छा से ले बैठ कहीं पर
करते जाएँ अल्पाहार ।।

15
अन्तिम में सहभागज बैठकर
साथ-साथ हम खायेंगे ।
जब जो चाहें सुविधापूर्वक
वापस घर को जायेंगे ।।

के. सी. सिन्हा

## इस अंक में


- Holi Milan 1-2
- मेरा गाँव, मेरा देश 3
- व्रत-त्योहार 4
- Kids Corner 6
- Maha Adhiveshan 7


'राढ़ी दर्शन' से जुड़े सभी सदस्य अवैतनिक हैं । इस पत्रिका का लक्ष्य एक ही है—अव्यवसायिक तौर पर साहित्य और समाज की सेवा। किसी प्रकार के विवाद का निपटारा सिर्फ गाजियाबाद (उ.प्र.) में ही होगा ।

# मेरा गाँव मेरा देश

## टेलढिया

'टेलढिया' मुंगेर ओर बाँका जिले के बीच एक पड़ने वाला एक ऐसा गाँव जो अपनी कई विशेषताओं के कारण जाना जाता है। 'टेलढिया' का वास्तविक नाम हरिवंशपुर है, जिसका यह नाम दुर्गा माँ के बहुत बड़े भक्त हरबल्लभ दास के नाम पर रखा गया है, जिनकी ही जमीन पर यह गाँव बसा है । हरबल्लभ दास जी के ही द्वारा सन् 1603 ई में गाँव के माँ दुर्गा का एक भव्य मंदिर स्थापित किया गया था, जिसका बाहरी भाग तो पक्की है, पर मंदिर का पिण्ड मिट्टी का ही है । इसका कारण यह बताया जाता है कि माता रानी को पक्की पिण्ड स्वीकार नहीं है क्योंकि जब भी पिण्ड को पक्की करने की बात की जाती है, माता रानी सपने में आकर ऐसा करने से मना करती है । मदिर के मुख्य मेढ़पति श्री योगेश चन्द्र दास हैं । टेलढिया गाँव की आबादी करीब छः सौ की है, जिसमें राढ़ी कायस्थ की जनसंख्या की बात की जाए तो वह करीब सौ की है । अधिकांश राढ़ी परिवार के सदस्य जीवन-यापन के लिए बड़े शहरों की ओर पलायन कर गए हैं । हाँ, यह बात जरूर है कि दुर्गा पूजा में अधिकांशतः लोग मौजूद होते हैं । गाँव में ही बड़ुआ नदी बहती है, जो टेलढिया

की प्राण भी है । वैसे तो टेलढिया में दुर्गा पूजा बंगाली पद्धति से ही मनाया जाता है, पर इस मंदिर की कुछ विशेषताएं भी हैं, जैसे इस मंदिर में दो मेढ़ हैं-एक छोटा और दूसरा बड़ा । छोटे मेढ़ में भगवान शंकर और उनके दो पहरेदार होते हैं, वहीं बड़े वाले मेढ़ में गणेश, कार्तिक, सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा और काली माँ । मंदिर की प्रतिमा की भी एक खास विशेषता है—इसमें प्रतिमा के पैर से गर्दन तक के भाग को तो कारीगर ही बनाते हैं, लेकिन प्रतिमा को मुख मेढ़पति परिवार के द्वारा कच्ची तरीकों से बनाया जाता है, जिसमें अपने आप रूप आ जाता है । यह एक कौतूहल का विषय भी है । पूजा के शुरुआत में लाखों की संख्या में भक्त सुल्तानगंज से जल पैदल माता रानी के दरबार में लाते हैं। चार पूजा को प्रतिमा को उजले रंग से रंगा जाता है, वहीं पांचवीं पूजा को मुंह में लाल रंग लगाया जाता है । छः पूजा की रात को गण (शादी) होती है, वहीं सात पूजा को गण को दौला के रूप में नदी पर ले जाते हैं, और जब नदी से दौला को मंदिर लाते हैं तो उसकी गलसेदी की जाती है । महिलाएं गीत गाती हैं और फिर मेढ़ को पिण्डी पर चढ़ाया जाता है । अष्टमी को लाखों-लाख की संख्या में भक्त सामूहिक पूजा-अर्चना करते हैं, और उस दिन लगभग पाँच हजार पाठाओं की बलि पड़ती है । वहीं नौ पूजा को सुबह दस बजे से ही बलि का पड़ना प्रारंभ हो जाता है और यह बलि का कार्यक्रम लगभग पन्द्रह घंटे तक चलता है । कुल मिलाकर कहें तो पाठाओं के बलि की संख्या लगभग बीस हजार तक हो जाती है । पाठा बलि की एक और विशेषता यह भी है कि यहाँ मलकाठ (जिसपर पाठा की गर्दन रखी जाती है) नहीं होता, और सिर्फ रस्सी से बांधकर ही पाठा बलि दी जाती है । इसी दिन मुंडन का भी आयोजन होता है । दस पूजा को कन्या पूजन होता है और इसी दिन मूर्ति का विसर्जन बड़ुआ नदी में कर दिया जाता है । करीब नौ दिन बाद विसर्जित मेढ़ को वापस नदी से निकाला जाता है और अगले साल फिर उसी मेढ़ पर प्रतिमा स्थापित होती है । यहाँ एक बात जो और जाननी जरूरी है वह यह कि 1603 ई. से इसी एक मेढ़ पर प्रतिमा स्थापित की जा रही है । मेढ़ वापसी के दिन दो बलि पड़ती है । वैसे एक अनुमान के अनुसार अन्य महीनों में दो सौ से लेकर तीन सौ बलि तक मंदिर में पड़ ही जाते हैं, जिसका एक कारण माता रानी द्वारा लोगों की मनौतियां पूरी करना ही होता है । मंगलवार एवं शनिवार को इस मंदिर में भारी भीड़ होती है ।

—अंजली कुमारी दास

सुपुत्री अनन्त कुमार दास, ग्राम-हरवंशपुर, टेलढिया, शंभुगंज, बाँका (बिहार)

## व्रत-त्योहार

# जय मंगलवारी कथा

रत्नद्वीपे हीरापति नामे एक सौदागर वास कोरतो/तार सात छेले छिलो, किन्तु एकटि ओ मेये छिलो ना/ सेई देऐ एक बनिक वास कोरतो। नाम छिलो धनपति एवं से छिलो सातटि मेयेर पिता, तार एकटि ओ छेले छिलो ना । हीरापति कोटिपति धनी सौदागर । संसोर तार अभाव बोलते किछु नेई/विपुल अर्थ सम्पद, मणि-मुक्ता, कारु कार्य खर्चत विराट प्रसादेर से मालिक/वेश सुखे स्वच्छन्द दिन काट छिलो तार/स्त्री रत्नावती ओ महा नन्दे संसारे दिन काटा च्छिलो ।

एक दिन दुपुरे माँ मंगलचण्डी बूड़ी भिखारिनीर वेशे तादेर बाड़िते उपस्थित होलेन/अन्दरे गिये बोललेन –कोथाय गो माँ । दूटी भिक्षा पावो । रत्नावती एकटि पात्रे किछु भिक्षा एने बोललो–केन पावे ना वाछा/एई नाओ । दाड़ाउ माँ/आमि जारतार हाथ थेके तो भिक्षा निई ना । ता तोमार छेले मेये कटि मा/सातटि छेले सुधु रत्नावती बोललो । मेये नेई/ना । ओ ताहाले तो तोमार हाथ थेके आभार भिक्षा नेउया हवे ना । आमि जाई तबे/तुमि दुपुर बेलाय एसे यदि भिक्षा ना निये जाओ तबे आभार मने बड़ो अशान्ति थेके जाबे बाछा । आभार कि छुरई आभाव नेई संसारे–केवल एकटि मेये छाड़ा/ता किरबो बोलो/सबई भगवानेर इच्छा ।

एई रकम कातरता देखे रत्नावतीर ऊपर मायेर दया होलो/माँ ताके बोललेन अच्छा माँ/तुमि ए भिक्षे अन्य कोनो भिखारिके दिये दिओ । आमि तोमाके एई फूलटि दिये गेलाम । ज्येष्ठ मासेर शुक्लपक्खे जय मंगलवारे व्रत करे एई फूल धोया जल खेओ/ सतेरटि हिसाबे सुपारी, धान, दूर्वा, फूल, पेता ओ कापोड़ दिये मंगलचण्डीर पूजा कोरे वामुनके दक्षिणा सह आभ, सुपारी ओ कांठाल दान कोरे आर दई चिड़े मेखे अर्धेक वामुन के दिये बाकिटा निजे खाबे/ताहाले तोमार मनेर दुख दूर होवे/बछरेर मध्येई सावित्रीर मतो सुन्दर एकटि मेये पावे । एई आर्शिवाद करे जाच्छि/ तोखोन आबार आमि एसे तोमार काछे भिक्षे नेवो।

कथा शेष करे माँ कोथाय जेनो अदृश्य होये गेलेन, रत्नावती भक्ति भरे फूलटि निये अन्दरे चोले गेलो । एदिके बनिक धनपतिर बाड़ीते माँ मंगलचण्डी एक दिन सेई रकम बूढ़ी भिखारिनी सेजे उपस्थित होयेछेन । धनपतिर स्त्री भिखारिनी के एकटि रूपोर थालाय करे भिक्षा दिते जाउया। मात्र माँ बोललेन- माँगो, आभार एकटि निवेदन आछे । आमि जार तार काछे कोखोना भिक्षे नीये ना । जार छेले मेयेते संसार आलो । केवल तार काछेई भिक्षे निए । तोमार कयटि छेले मेये माँ ।

कलावती एकटा दीर्घ सांस फेले बोललो वाछा आमार कपाले तो विधि छेले लेखेननि । आमि सात सातटि मेयेर माँ कि कोरबो बोलो भाग्ये जा थाके ताईतो होबे । ता तो बुझि । किन्तु आमि तो ताहले तोमार हाथ थेके भिक्षे निते पारी ना । जाई तबे अन्य कोन जायगाय ।

ओगो वाछा, दुपुर वेलाय बाड़ीते एसे फिरे जेओना भिक्षे ना निये ताते जे आमार अकल्याण हवे । एई कथाय तार ऊपर मायेर दया होलो । तिनी तखन ताके एकटि फूल दिये बोललेन देखो माँ ज्येष्ठ मासेर शुक्ल पक्खेर जय मंगलवार व्रत करे एई फूलटि धुए जोल खाओ ताहाले मोनेर वासना पूर्ण होवे तखन आमि आवार भिक्षे नेवो । व्रतेर अन्यान्य नियम ओ बोले माँ अदृश्य होये गेलेन । कलावती मनेर दुःखे धीरे-धीरे अन्दरे चोले गेलो ।

माँ मंगलचंडीर कृपाय वत्सरे मध्येई रत्नावती ओ कलावती परस्परेर मेये ओ छेले होलो । खूब धूमधाम कोरे दूजोनेर बाड़िते आमद आह्लाद होलो । बूड़ी वेषे माँ मंगलचंडी ओ आवार तादेर काछे थेके भिक्षा निये आर्शीवाद कोरे गेलेन एवं जावार समय छेलेटिर नाम राखलेन जय देव आर मेयेटिर नाम राखलेन जयावती ।

कालक्रमे जयदेव ओ जयावती दिने-दिने बेड़े चोललो । वाणिज्य पुत्रे हीरापति ओ धनपति एक दिन विधातार इच्छाय बन्धुभावे मिलिते होवे । दूटि परिवारेर मध्ये वेश घनिष्ट संबंध स्थापित होलो एवं तार मध्येई जयदेव ओ जयावती खूब मेशामेशि कोरलो दूजोनेते ।

जयदेव एखन वेश बड़ो हयेछे । एक दिन से सोकाल वेलाय पुष्प उद्याने दूटि श्वेत पायरा निये खेला कोरे छिलो । एमन समय एकरि पायटा तार हाथ थेके उड़े गेलो । ये तखन सेई पायराटि के लख्य करे पिछु-पिछु छुटते लागलो । अनेक दूर गिये पायराटि जेखाने एकटि बागानेर मध्ये पुकुरेर घारे जयावती जय मंगलवारेर व्रत कोरे छिलो सेई खाने गिये बोसलो जयावती ओ संगे-संगे पायराटिके कोले तुले निलो । किछु पोरे खोज कोरते-कोरते जयदेव सेखाने एसे उपस्थित होलो । पायराटिके जयावतीर कोले देखे से बोललो । आमार पायरा दाउ ।

जयावती तार दिके चेले बोललो ओ आपनि उड़े एसे आभार काछे बसेछे आर तो आमि तोमाके ए पायरा दिवो ना । देवे ना । ताहाले तोमार एई सोब आमि पुकरेर जाले फेले देवो । सेकि ए जे जय मंगलवारेर व्रतेर जिनिस ।

ए व्रत कोरले कि होय इच्छाभरे जयावती उत्तर दिल ये ए व्रत पालोन कोरे तार कखनो कोनो दुःख थाके ना डोबे ना आगुने पोड़े ना । खोड़ाय काटे ना, हाराले पाय आर मरे गेले बेंचे उठे ।

वटे—जयदेव एकटू विद्रूपर हासि हेसे चोले गेलो । मोने मोने बोले उठलो से आच्छा पोरे देखा जाबे तोमार बहादुरीटा । माँ मंगलचण्डी एक दिन सदागरओ बनिक के स्वप्न देखिये बोल्लेन—आमार इच्छा तोमार जयदेव ओ जयावतीर परस्परेर संगे विये दिये सवाई सुख भोग कर ।

तारपर एक दिन शुभ दिन हीरापति ओ धनपति जयदेव ओ जयावतीर विये दिये दूजने वैवाहिक बन्धन आबद्ध होलो । रत्नद्वीपे से दिन कि आनन्देर घटा । कलावती ओ रत्नावती आनन्दे वर वधुके निये कतो आमोद-प्रमोद करछे । चारिदिके गान बाजना, साजगोज विराट होचे ।

पौर दिन जयदेव जयावती के निये पालकी चढ़े बाड़ीर पथे जाच्छे । हठ्ात खनिक दूरे आसतेई जयदेव लक्ष्य करलो जयावती मोने मोने विड़विड़ कोरे कि येन बोले नमस्कार करलो जयदेव ताड़ाताड़ी जयावती के जिज्ञासा कोरलो जया तुमी मोने-मोने की बोलले नमस्कार कोरले ?

आज आमार जय मंगलवारेर व्रतेर दिन की ना ताई पूजो कोरते ना पेरे मोने-मोने पूजो करे नमस्कार कोरलुम । ए व्रत कोरले की होय । एक बार तो बियेर आगे तोमाय बोले छिलाम ए व्रत ये कोरे, से मंगले थाके जले डोबे ना, आगुने पड़े ना, खोड़ाय काटे ना । हाराले फिरे पाय मोरे गेले बेचे उठे किछुखने चुपचाप कोरे गिये नदीर धारे एक जाय गाय एसे हठात जयदेव बोललो—जया एखाने बड़ो डाकातेर भय । तुमी शीगीर सोब गहना गांठी खुले दाउ । एई बोले जयावतीर सब गहना गुलि खुले निये एकटा पुटुली करे नदीर मध्ये फेले दिलो । सोंगे-सोंगे पुटुलिटा एकटा राघव वोयाल गिले खेये फेललो । बर कने बाड़ि असतेई पाराड़ लोकेरा बोलते लागलो-मांगो मेयेक एकखानि गहनाओ देयनि । जाहन ना केमोन घोरे मेयेर संगे धनपति छेलेर विये दिये छे ।

बऊ भात होवे आज जेलेय माछ धोरते गेलो—धोरे ओनलो सेई बो भात माछटि । किन्तु माछटि केऊ कूटते पारलो ना । जयदेव बोललो एई माछ जया कूटबे । सोबाई हेंसे उएछलो । जया माँ मंगलाचण्डीर नाम स्मरण कोरे सेई माछटि बँटिर गाये ठेकाले ओमानि खान-पान होये काटा होये गेलो माछ । पार पेट थेके सेई गहनार पुतुलि पेये गहनागुलि पेर एलो । सपाई अवाक् होये गेलो ।

रँधवे के एखाने एई माछ जया रँधवे-जयदेव बोललो । मां मंगलचण्डीर नाम स्मरण कोरे जया रेंधे फेललो सेई माछ । सेबाई खेये सुख्याति कोरलो । तारा बोललो, हीरापतिर मेयेर जयावती नाम सप्ति सार्थक होयेछे । सोव दिकेई तार जय-जयकार । किछुकाल पोरे जयावतीर ए कटि छेले होलो । हीरापति आदोर कोरे नातिर नाम राखलो जयन्ता जयदेव सुयोगमत ऐक दिन जयन्त के निये गिये कुमोर देर पाने फेले रेखे चोले एलो । माँ मंगलचण्डीर दयाय कुमारेश से दिन पोने आगुन धोरलो ना । जयन्त के कोले कोरे निये माँ मंगलचण्डी जयावती के दिये एलेन ।

आर एक दिन जयदेव जयन्त के मेरे फेले पुकुरेर घोटर सिंदिर नीचे रेखे एलो । माँ मंगलचण्डी छेले के बाँचिये जयावतीर कोले दिये एलेन एवं ताके खूब सावधान कोरे दिलेन । जार पोर एक दिन जयदेव जयन्त के एकटि निजैन प्रांतेर निये गिये खाड़ा दिये केटे येमोन फिरे आयछे, ओमनि पथे । जयातीर संगे तार देखा होलो । जयावती काँदते-काँदते ताके बोललो—तुमि आमार एइकि सर्वनाश कोरले । तारपोर छुटे गिये छेलेर मुण्ड आर छोड़ एक करे माँ मंगलचण्डीर नाम स्मरण कोरतेई जयन्त बेंच उठे माँ, माँ बोले डेके उठलो ताके । जयावती जयदेव के बोललो एखोनो तोमार माँ जयचण्डीर ऊपर विश्वास होय ना ?

जयदेव लज्जित ओ अप्रतिभ होये बोललो हाँ जया, आमार विश्वास होये छे चोलो आज थेके आमरा माँयेर महिमा जोगोते प्राचार कोटि गिये । मायेर कृपादृष्टिर तारा खूब सुखे संसारे कोरते लागलो । छेले मेये धन रत्न हाथी, घोड़ा प्रभृति ऐश्वर्य तादेर संसारे सतगुने बेड़े गेलो । तारपोर मायेर इच्छाय ऐक दिन स्वर्ग थेके पुष्पकरथ एलो एवं सेई रथे चोड़े जयदेव ओ जयावती अमरावतीते चोले गेलो ।

सोनार माँ मंगलचण्डी रूपोर बेला
केलो माँ मंगलचण्डी एतो बेला
हाँसते-खेलते सोनार दोलाय दुलते
तेल हल्दी माखते आधारे घाट कोरते
अपुत्र के पुत्र दीते, असरणे सरण दीते
अराज्ये राज दीते, अबीये बीये दीते
निर्धनेर धन दिते, अन्धेर चक्षु दिते,
अन्तकाले स्वर्ग पेते करो ना हेला ।

-वसुन्धरा
मकान नं. 304/22, शक्तिनगर, गुड़गांव, हरियाणा

## kids Corner

### POSITIVE IN NEGATIVES!

Story Presented by– Source Unknown

A young woman was sitting at her dining table, worried about taxes to be paid, house-work to be done and to top it all, her extended family was coming over for festival lunch the next day. She was feeling very uneasy and uncomfortable for all the activities she had to do and cribbing for how tiring it is going to be for her.

As she turned her gaze sideways, she noticed her young daughter scribbling furiously into her notebook.

"My teacher asked us to write a paragraph on '"Negative Thanks Giving" ' for homework today," said the daughter."She asked us to write down things that we should be thankful for but we are not, things that make us feel not so good in the beginning, but turn out to be good after all"."

With curiosity, the mother peeped into the book. This is what her daughter wrote:

I'am thankful for Final Exams, because that means school is almost over.

I'am thankful for bad-tasting medicine, because it helps me feel better.

I'am thankful for waking up to alarm clocks, because it means I am still alive."

It then dawned on the mother, that she had a lot of things to be thankful for!

She thought again –

She had to pay taxes but that meant she was fortunate to be employed.

She had house-work to do but that meant she had a shelter to live in.

She had to cook for her many family members for lunch but that meant she had a family with whom she could celebrate.

Moral: We generally complain about the negative things in life but we fail to look at the positive side of it. What is the positive in your negatives?

Look at the better part of life today and make your everyday a great day.
Be happy and feel blessed always.

### गजल

यादो का गंगा म सब बह गया है
ासमटा सा कोई मकां ढह गया है

बुझी सी लगती है आग नफ़रतो का
आखा को जलाता धुंआ रह गया है

छूओ मत, मरहम भी दद करता है
ादल-ए-नाजुक बहुत सह गया है

ामल तो मंजिल , न ामल तो नाकामी
जिंदगी म बस क्या यहा रह गया है

गमा औ रौशनी दाना ामला सूरज से
बस रौशनी दे चाँद, कुछ कह गया है

बस रौशनी दे चाँद, कुछ कह गया है...
बस रौशनी दे चाँद, कुछ कह गया है ...

निरुपम सिन्हा 'आसदीप'
C-512, Princess Park, Ahinsa Khand-II,
Indirapuram, Ghaziabad-201014 (U P)

पत्रिका में आलेख भेजने वाले सभी लेखकों से अनुरोध है कि वे आलेख भेजते समय रेगुलर हिन्दी या अंग्रेजी फाण्ट का प्रयोग करें, गूगल फाण्ट का बिल्कुल भी उपयोग न करें एवं यथासंभव लेख एमएस वर्ड में ही टंकित कर भेंजें, इससे उनके आलेख के त्रुटिपूर्ण होने की संभावना कम से कम रहेंगी । आप अपनी रचनाएं abhinandan2009@gmail.comपर भेज सकते हैं। धन्यवाद ।

**सेवा में,**

माननीय सदस्य/सदस्या,

आपको यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है कि हमारी अपनी संस्था अखिल भारतीय राढ़ी कायस्थ संगठन, दिल्ली दिनांक 12 जून, 2016 को राढ़ी कायस्थ महा-अधिवेशन का आयोजन करने जा रही है । संस्था के अभिन्न अंग होने के नाते आप की उपस्थिति एवं मार्गदर्शन इस महाधिवेशन को और भी प्रासंगिक बनायेगी, इसी विश्वास के साथ आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है । महाधिवेशन की विवरणी इस पत्र के साथ संलग्न की गई है, जिसमें विषय-संक्षेपण दिया गया है ।

आपसे अनुरोध एवं अपेक्षा है कि राढ़ी समाज के इस राष्ट्रीय स्तर के अधिवेशन में सक्रिय रूप से भाग लेंगे, जिसमें राढ़ी समाज एवं संस्कृति पर विशेष चर्चा होगी ।

भवदीय

(जयदेव कुमार सिन्हा)

अध्यक्ष,

अखिल भारतीय राढ़ी कायस्थ संगठन, दिल्ली

# RK Maha Adhiveshan
12th June 2016

## हम कौन थे, क्या हो गए, और क्या होंगे अभी !
## आओ आज मिलकर विचारें, ये समस्याएँ सभी !!

### ➢ हम कौन थे...

- **Discussion:** Background of Radhi Kayastha History written and told.

### ➢ क्या हो गए...

- **Learnings:** It is 90 year ago when our predecessor had organized first formal Summit in the year 1925 at Banka. Since 1925 to 2015 we have had 26 Summits on the Radhi Kayastha time-line. In the year 2016 let us call another Apex Summit RK Maha-Adhiveshan and discuss sincerely on the significant impact of Fast-moving world including but not limited to Society, Culture, Tradition, Language, Employment, Marriage Institution etc. क्या खोया क्या पाया...!

### ➢ और क्या होंगे अभी...

- **Direction**: In the present scenario, there are many challenges including Identity Crisis, Generation Gap, Cultural Shift, Social disperse. The RK Maha-Adhiveshan gives us an opportunity to contribute the Structured Thought, Wisdom and Basic Outline for Generations to come.

### ➢ आओ आज मिलकर विचारे ये समस्याएँ सभी

- **Participation:** Let us participate in the coming RK Maha-Adhiveshan scheduled at Delhi to deal with above mentioned issue. Think, Discuss and Draw Footprints for Generations to come which will enable them in bound closely with the system Social and Cultural.
- **Summary: will be released within 60 days for all RK families all across.**

# RK Maha Adhiveshan

12th June 2016

## Matter for Discussion :-

- **History of Radhi Kayastha**

- Discussion based on literature or referring prestigious and authentic sources. Is it required to be documented separately?

- **Learnings of last one century**

- Discussion with reference to social and cultural identity, tradition, behaviour shift etc. What good practices adopted as part of our tradition and culture and what should be avoided.

- **Identity Crisis and Generation Gap**

- Discussion ideally to include views of at least three generation in present. Who do we want to be identified as in future in the society? Also, to document the connection to our roots and prepare population database.

- **Cultural Shift and Social Disperse**

- Do we need to document our traditions to be available to new generation? Preserving the culture in the era of migration and nuclear family trend due to remote employment opportunity. All the chapter of Radhi Kayastha Sangathan is requested to forward names of person likely to participate this Maha-Adhiveshan and also let us know name of speaker. This will enable us to prepare detailed programme so that none of the speaker is left out without getting an opportunity. This information may kindly be forwarded to us at the earliest but not later than 10th of May ' 2016 to prepare comprehensive programme.

## Enquiry:

**1.** Jaideo Kumar Sinha, President ABRKS– 9958885338 (jksinha1957@gmail.com)
**2.** Amarendra Kumar Ghosh, General Secretary – 9871003459 (ghoshamarendra@gmail.com)